चूहा मर चुका है, चींटी दुखी है

प्यूब्लो इंडियन कहानी

चूहा के फर में एक गाँठ पड़ गई.

उसने फर थोड़ा सा खींचा
लेकिन उससे गाँठ खुली नहीं.

"चींटी मेरी मदद करेगी,"
उसने सोचा, और वो चींटी को ढूंढने गया.

चींटी, किचन में मकई के दाने उठा रही थी.

"मेरे फर में गाँठ है," चूहा ने उससे कहा.

"पीछे मुड़ो," चींटी ने कहा.

"मैं गाँठ खोल दूँगी."

"उस मटके में क्या है?" चूहे ने पूछा.
लेकिन चींटी काम में व्यस्त थी
और उसने कुछ नहीं कहा.

मटके में क्या है देखने के लिए
चूहे ने अंदर झाँका और वो आगे झुका.

"गाँठ खुल गई है," चींटी ने कहा.
और फिर उसने चूहे की
पूँछ को छोड़ दिया.
चूहा "धम्म" से मटके में गिरा.

" चूहे," चींटी ने पूछा,
"क्या तुम्हें मदद की ज़रूरत है?
"चूहे," चींटी ने पूछा,
"क्या तुम अभी भी ज़िंदा हो?"

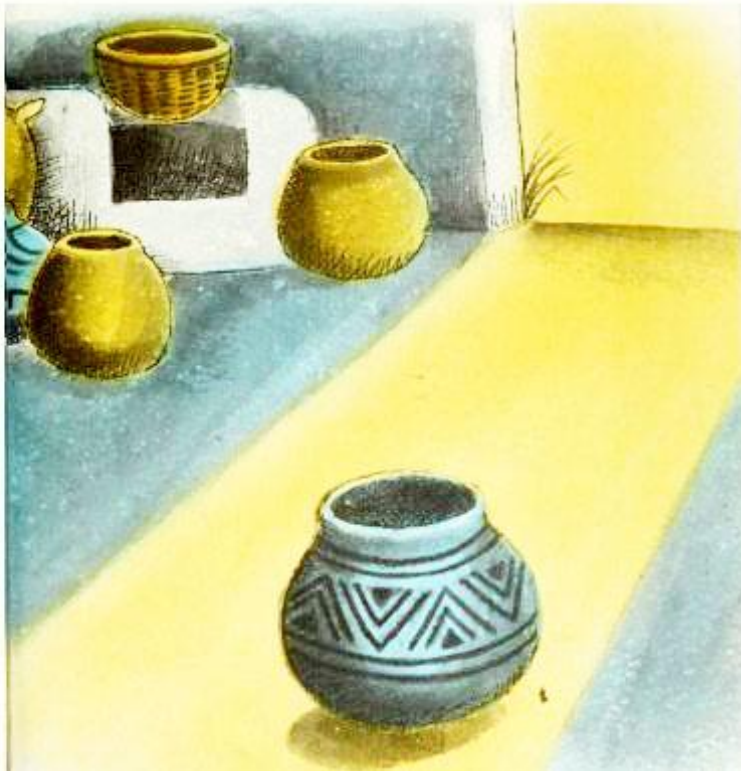

लेकिन चूहा व्यस्त था
उसने कोई जवाब नहीं दिया.
चींटी इधर-उधर भागी
और फिर वो रोने लगी.

"तुम क्यों रो रही हो?"
नीलकंठ ने पूछा.

"चूहा मर गया है और मैं दुखी हूं,"
चींटी ने कहा.
"यही मेरे रोने का कारण है."
"यह सुनकर मैं भी दुखी हूँ,"
नीलकंठ ने कहा.

"मैं अपने पंख गिरा दूंगा,"
नीलकंठ ने कहा.

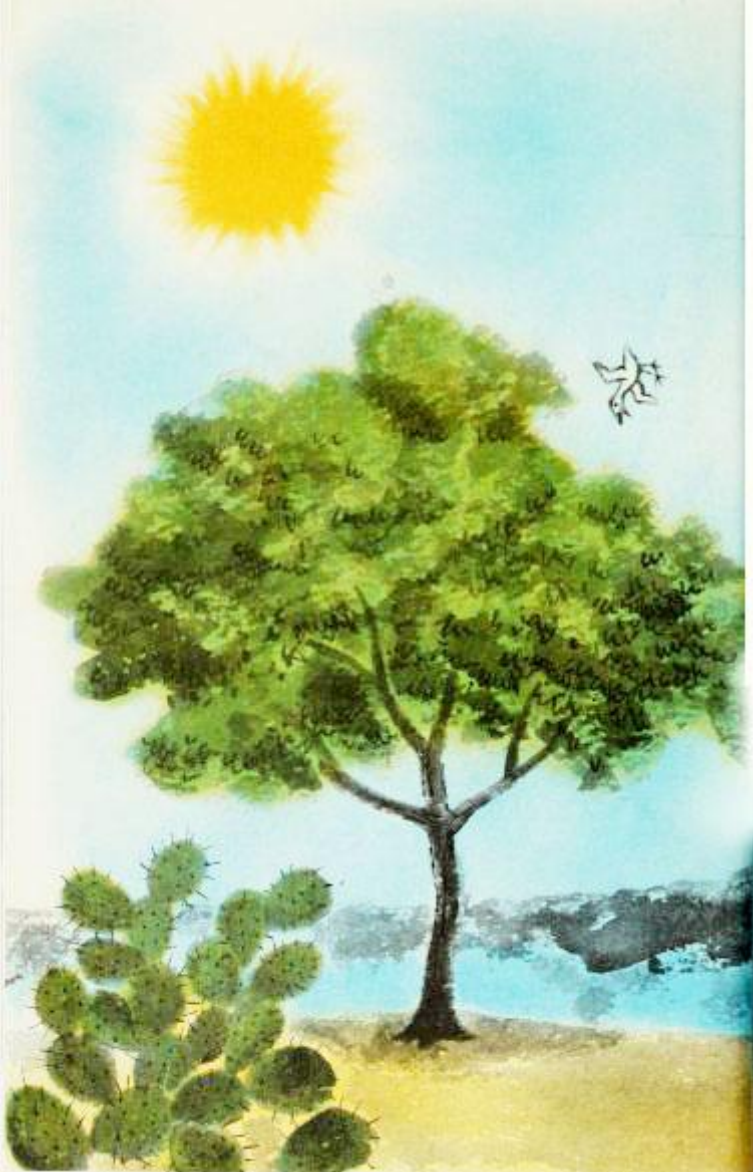

फिर उसने कपास के पेड़ में
अपने पंख गिरा दिए.
"तुम्हारे पंख कहाँ हैं?"
कपास के पेड़ ने पूछा.
"चूहा मर गया है और चींटी दुखी है
और इसलिए मैंने अपने पंख गिरा दिए,"
नीलकंठ ने कहा.

"अगर चूहा मर गया है
और चींटी दुखी है
और तुम्हारे कोई पंख नहीं है,
तो मैं भी सिकुड़ कर छोटा हो जाऊंगा,"
पेड़ ने कहा.
और उसने वही किया.

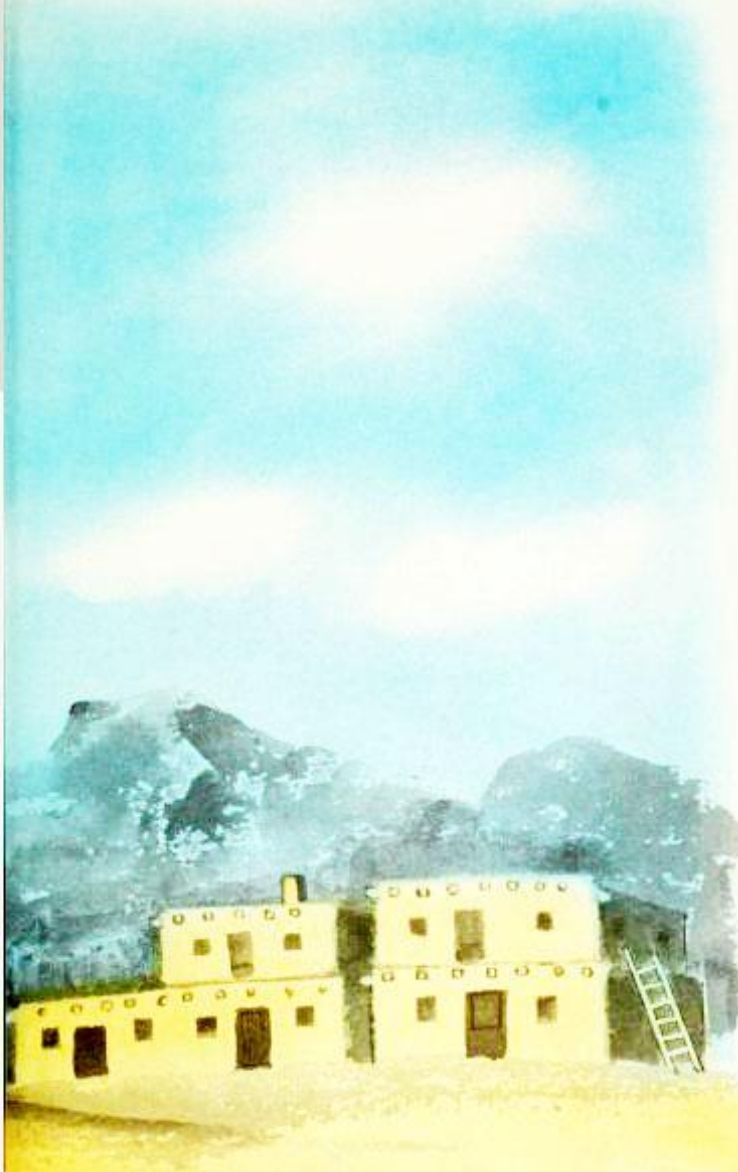

तभी एक भेड़ कपास के पेड़ के पास आई.
वो सूरज से बचने के लिए वहां आई थी.
लेकिन पेड़ उसे कोई छाया नहीं दे पाया.
"तुम इतने छोटे और सिकुड़े क्यों हो?"
भेड़ ने पूछा.

"चूहा मर गया है और चींटी दुखी है
और नीलकंठ ने अपने पंख गिरा दिए.
इस कारण मैं सिकुड़ गया हूँ,"
कपास के पेड़ ने कहा.

"अगर चूहा मर गया है
और चींटी दुखी है
और नीलकंठ के पास कोई पंख नहीं है
और तुम सिकुड़ गए हो.
तो मैं भी पतली हो जाऊंगी,"
भेड़ ने कहा.
और उसने वही किया.

फिर भेड़ नदी पर पानी पीने गई.
नदी ने कहा,
"तुम इतनी पतली क्यों हो भेड़?"

भेड़ ने कहा, "चूहा मर गया है
और चींटी दुखी है.
नीलकंठ ने पंख गिरा दिए हैं
और कपास सिकुड़ गया है.
इसी वजह है कि मैं पतली हो गई हूं.”

"अगर ऐसा है," नदी ने कहा.
"तो मैं भी सूख जाऊंगी."
और नदी ने वही किया.
फिर एक लड़की नदी पर
पानी लेने आई.

"चूहा मर गया है और चींटी दुखी है.
नीलकंठ ने अपने पंख गिरा दिए,
कपास का पेड़ सिकुड़ गया है,
और भेड़ पतली हो गईं.
इस कारण मैं सूख गई हूं," नदी ने कहा.

"फिर मैं अपना मटका फोड़ दूंगी,"
लड़की ने कहा.
और उसने वही किया.

लड़की की माँ ने पूछा,
"पानी कहाँ है?"
लड़की ने उन्हें बताया.
"चूहा मर गया है
और चींटी दुखी है.
नीलकंठ ने अपने पंख गिरा दिए
और कपास का पेड़ सिकुड़ गया है.
भेड़ पतली हो गई
और नदी सूख गई है
इसलिए मैंने अपना
पानी का मटका तोड़ दिया."

"फिर मैं अपने कानों के झुमके जला दूँगी,"
लड़की की माँ ने कहा.
और उन्होंने वही किया.

माँ के भाई ने पूछा,
"तुम अपने कानों के झुमके
क्यों जला रही हो?"

"चूहा मर गया है और हर कोई दुखी है,"
लड़की की माँ ने कहा.
"यही कारण है कि
मैं अपने झुमके जला रही हूं."

"फिर मैं अपने घोड़े की
पूंछ काट दूंगा,"
आदमी ने कहा.

लेकिन घोड़े ने आदमी को
अपनी पूंछ काटने से रोका.

घोड़े ने कहा, "मेरी पूंछ लंबी और प्यारी है
और वो मक्खियों को भगाती है.
आप उसे क्यों काटना चाहते हैं?"

"चूहा मर गया है और मैं दुखी हूं,"
आदमी ने कहा.
"अगर ऐसा है," घोड़े ने कहा,
"तो आप मेरी पूंछ ज़रूर काटें.
लेकिन क्या आपने खुद मरा चूहा देखा है?"
"नहीं," आदमी ने कहा.
"मैंने बस बहन को अपने
झुमके जलाते हुए देखा था."

"क्या आपने मरे चूहे को देखा?"
घोड़े ने पूछा.
"नहीं," महिला ने कहा,
"लेकिन मेरी बेटी ने नदी को सूखते हुए देखा."

घोड़ा नदी पर गया.
"क्या आपने मरे हुए चूहे को देखा?"
उसने पूछा.
"नहीं," नदी ने कहा,
"मैंने भेड़ को देखा और
वो एकदम पतली थी."

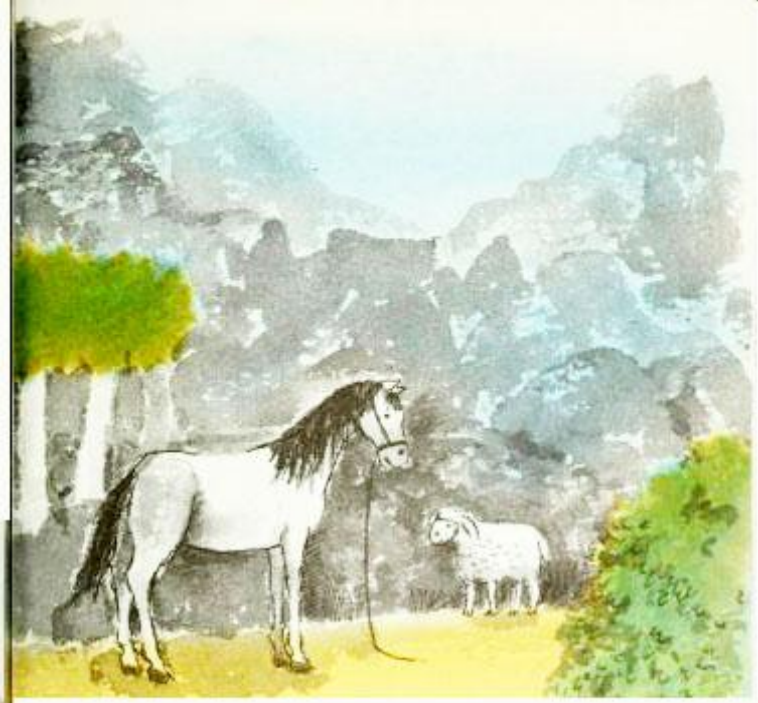

"क्या आपने चूहे को मरा हुआ देखा?“
घोड़ा ने भेड़ से पूछा.
"नहीं," भेड़ ने कहा.
"मैंने कपास के पेड़ को देखा
और अब वो छाया नहीं देता."

घोड़ा पेड़ के पास गया.

"क्या आपने मरे हुए चूहे को देखा?"

उसने पूछा.

"नहीं," पेड़ ने कहा.

"मैंने नीलकंठ को

अपनी टहनियों में पंख गिराते हुए देखा."

"मैं दुखी हुआ और फिर मैंने
अपने पंख गिरा दिए," नीलकंठ ने कहा.
"तब शायद आपने मरे चूहे को
ज़रूर देखा होगा," घोड़े ने पूछा.
"नहीं," नीलकंठ ने कहा.
"मैंने बस चींटी को रोते हुए देखा."

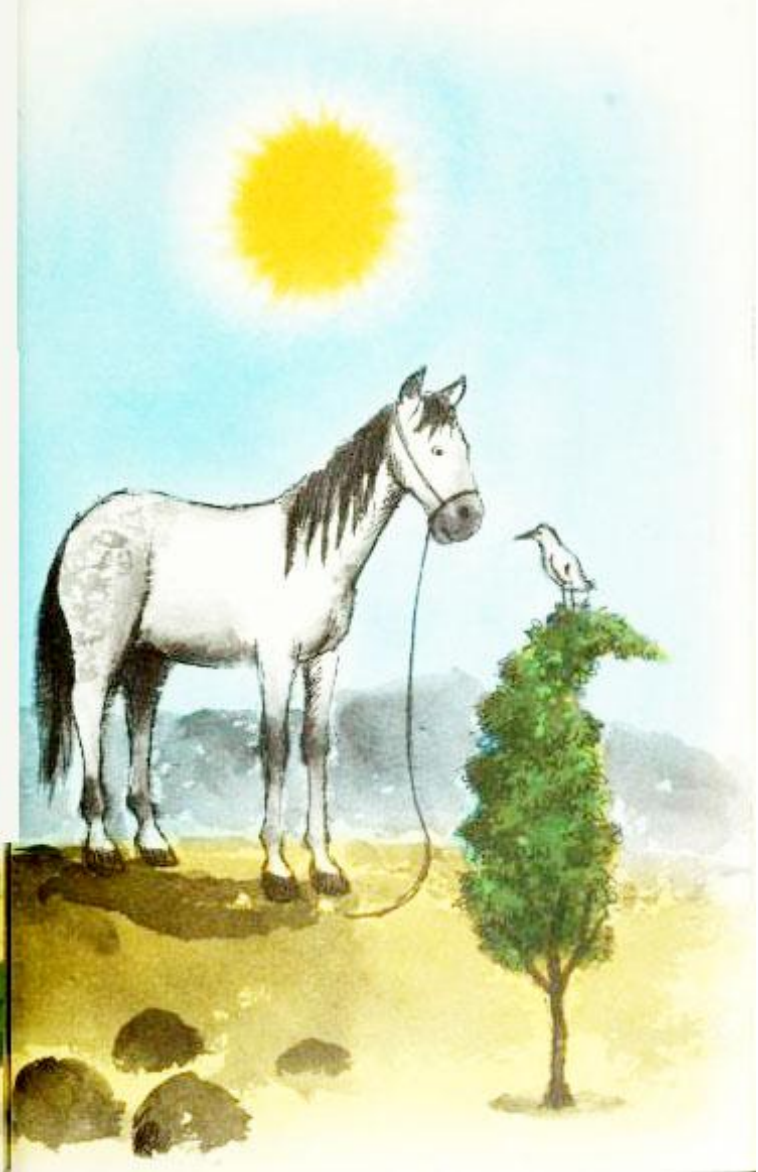

फिर घोड़ा, चींटी की तलाश में चला.

घोड़े ने मटके में झांक कर देखा.
"उस मूर्ख चींटी ने मटके में नहीं देखा,"
उसने कहा.
"और उसके कारण मेरी सुन्दर पूंछ
लगभग कटने वाली थी."

फिर घोड़ा घूमा और
उसने अपनी पूँछ मटके में डाली.

चूहा, पूँछ पकड़कर
मटके में से बाहर निकल आया.

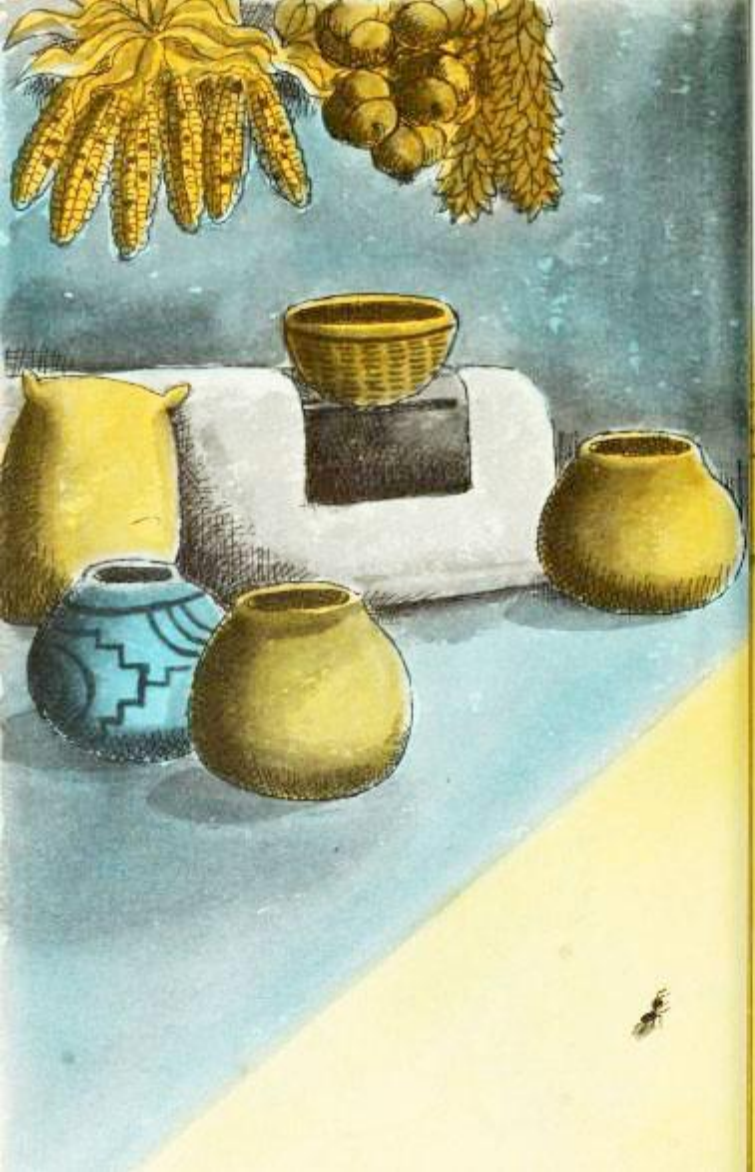

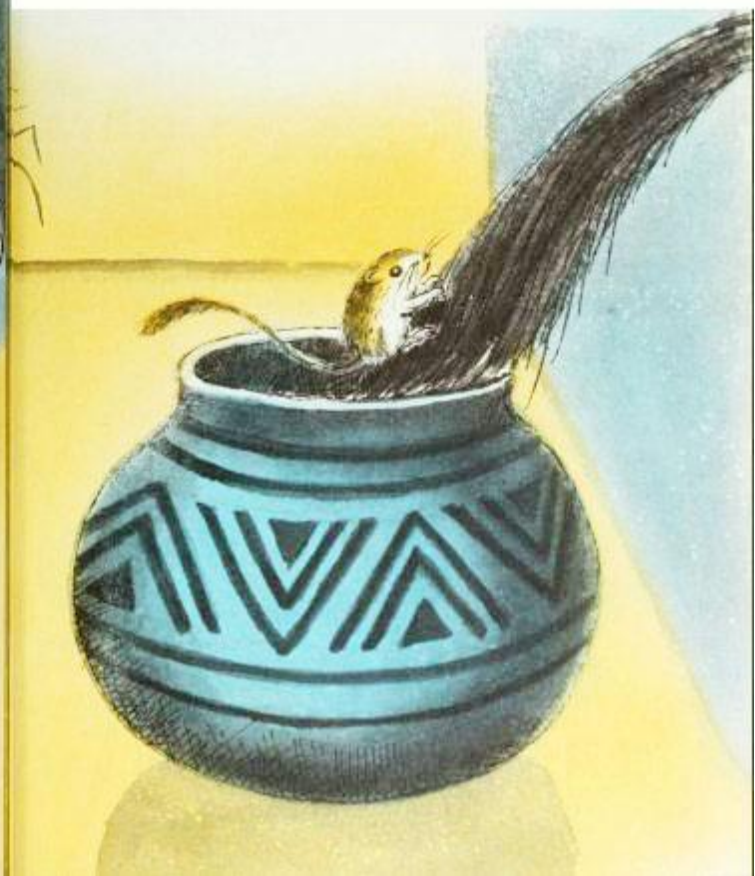

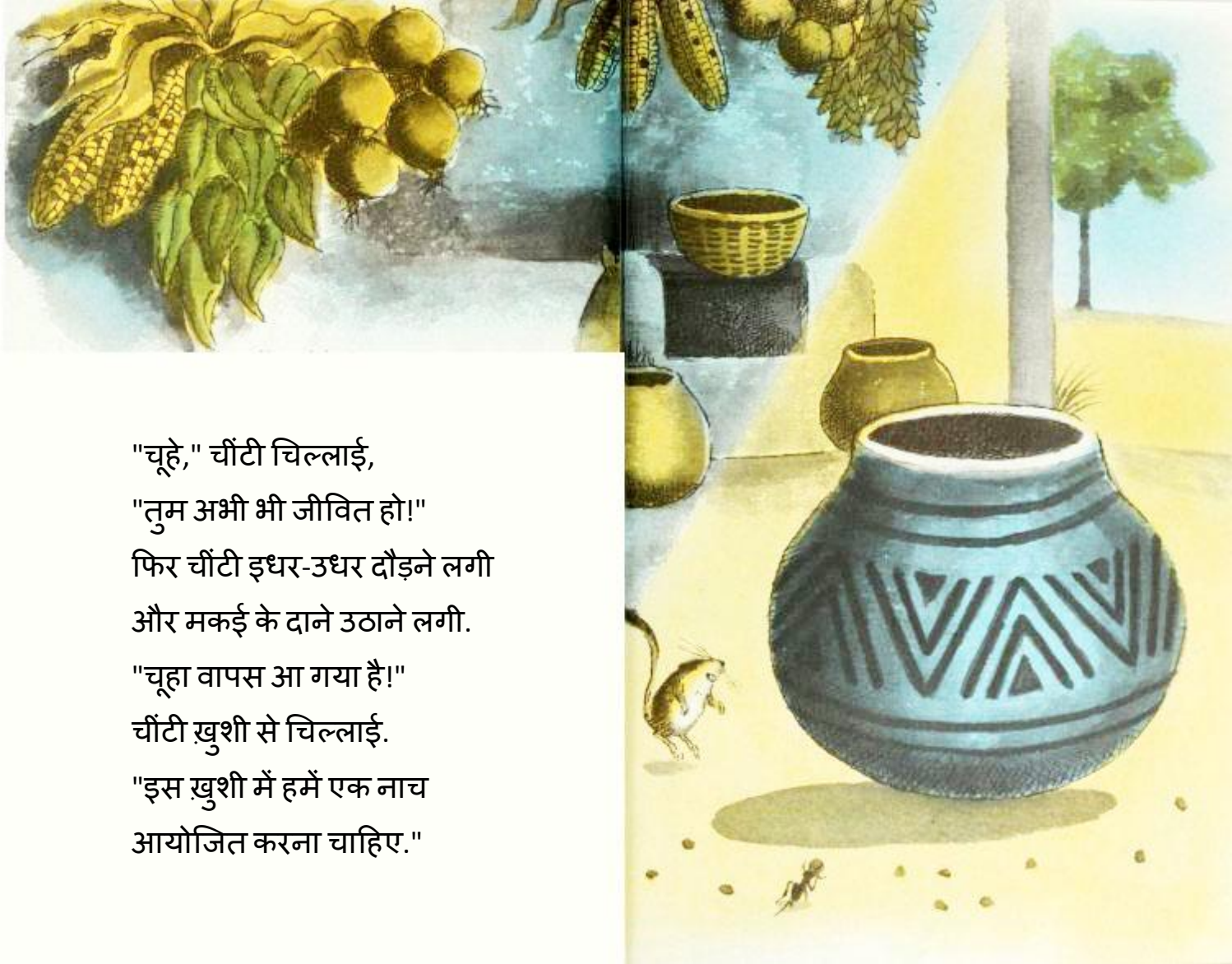

"चूहे," चींटी चिल्लाई,
"तुम अभी भी जीवित हो!"
फिर चींटी इधर-उधर दौड़ने लगी
और मकई के दाने उठाने लगी.
"चूहा वापस आ गया है!"
चींटी ख़ुशी से चिल्लाई.
"इस ख़ुशी में हमें एक नाच
आयोजित करना चाहिए."

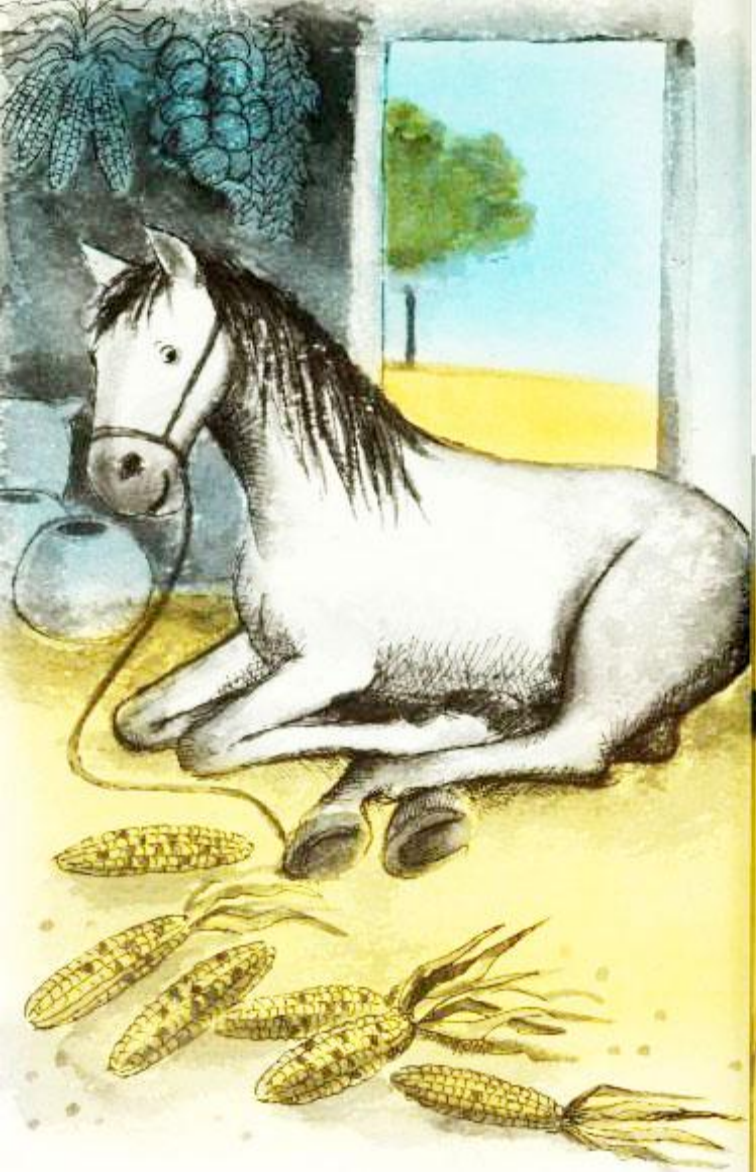

घोड़े की लंबी प्यारी पूंछ में गांठें थीं
लेकिन चींटी ने उन्हें
चूहे ने मदद से खोल दिया.

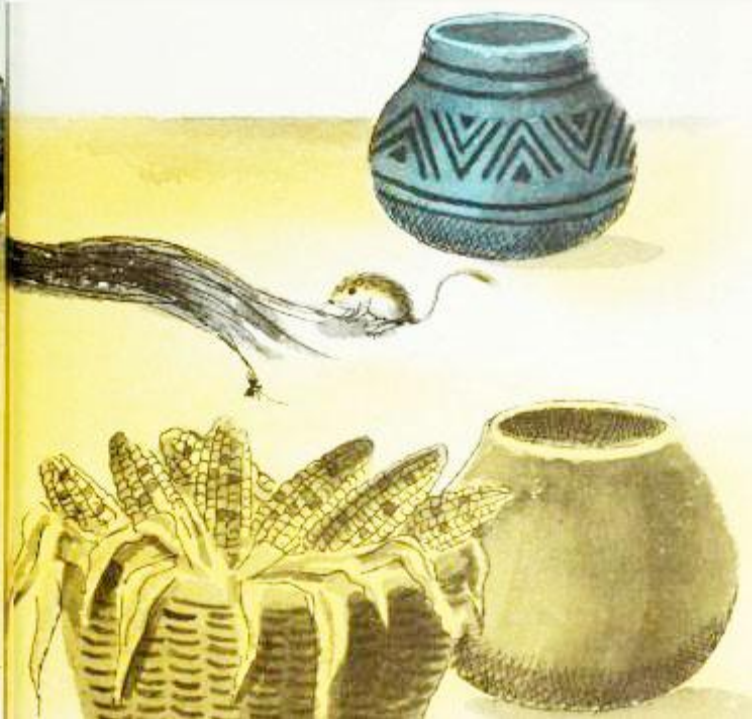

नदी अब पहले की तरह से बहने लगी
और भेड़ मोटी हो गई,
और कपास का पेड़ जल्द ही
छायादार बन गया.

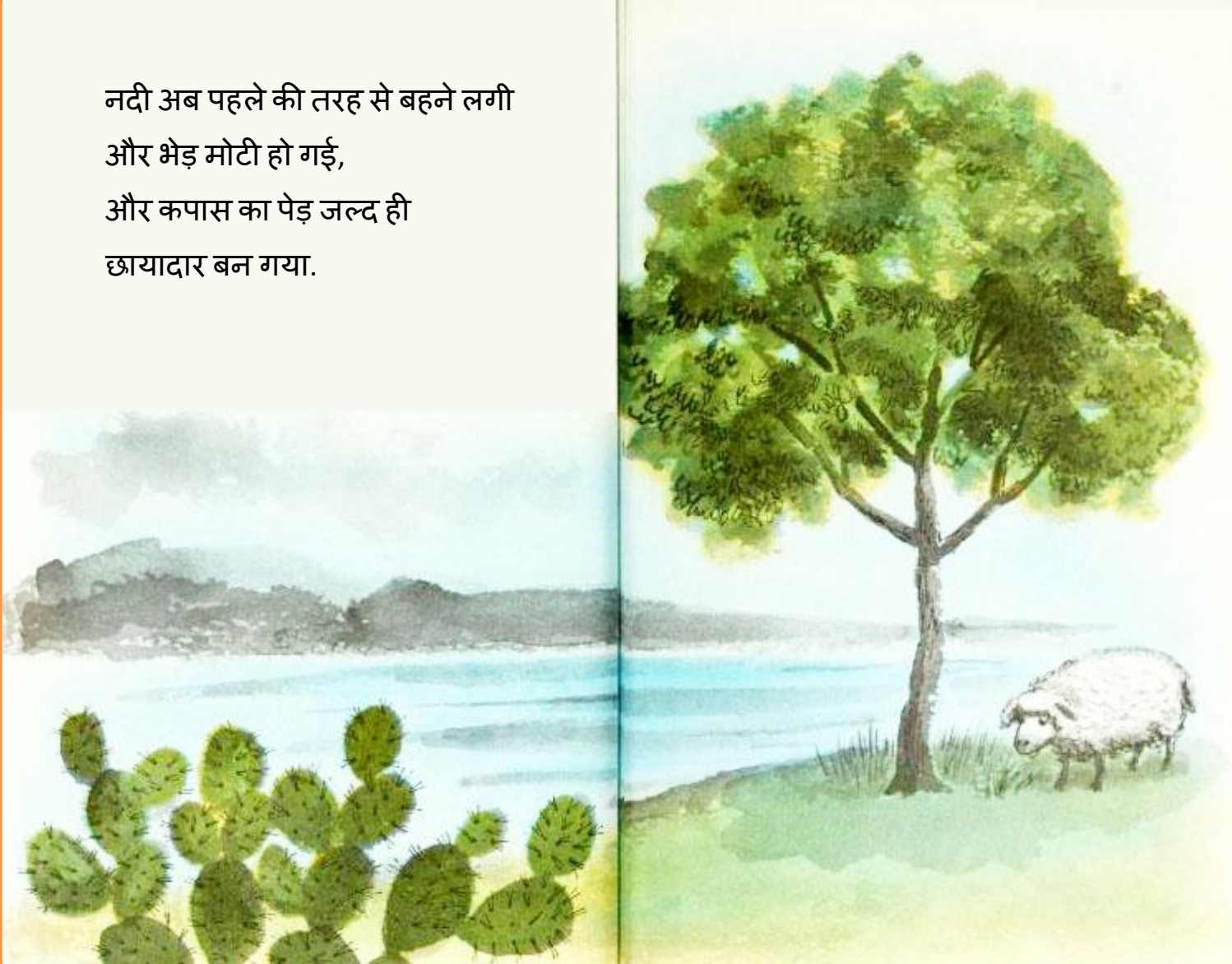

महिला ने नया मटका बनाया
और उसके भाई ने उसे नीले रंग के
नए झुमके दिए.

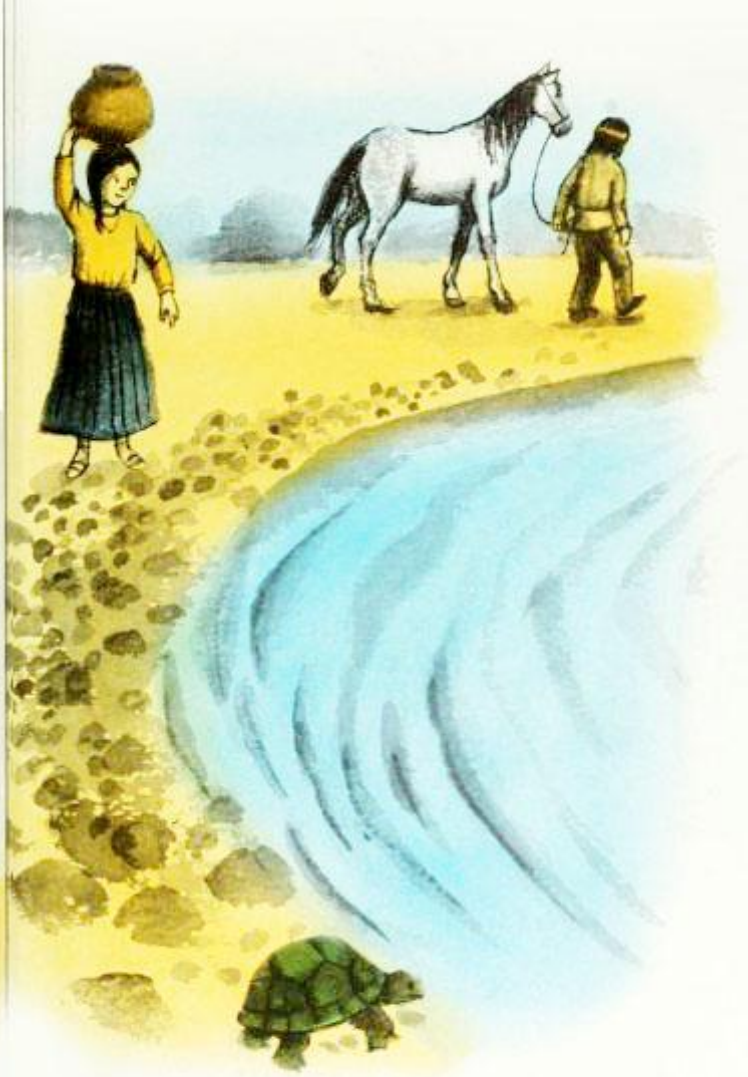

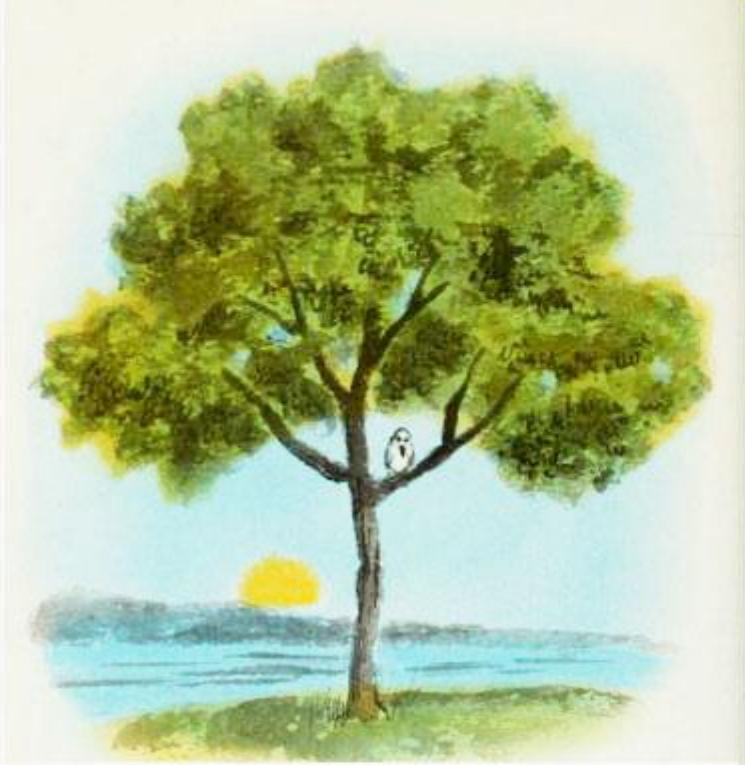

पर नीलकंठ को एक लंबे समय तक
पेड़ पर बैठना पड़ा,
तभी उसे उसके पंख वापस मिले.

समाप्त